दिल्ली संस्कृत अकादमी
(राष्ट्रिय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार)
प्लाट नं. 5, झण्डेवालान, करोल बाग, नई दिल्ली
110005
दूरभाष : 011–23635592
ईमेल : delhisanskritacademy@gmail.com

Delhi Sanskrit Academy
(Govt. Of NCT of Delhi)
Plot No. 5, Jhandewalan, Karol Bagh, New Delhi, 110005
Phone : 011-23635592
Email:-delhisanskritacademy@gmail.com

Ref. No DSA-C012/1/2017-Program-O/oSecy(DSA) 3024-3087 Dated 25/01/2017

सेवा में,

Receipt No. 574
Date 10/02/2017
Dyal Singh (Eve.) College
Lodi Road. New Delhi-110003.

12. संस्कृत विभागाध्यक्ष,
दयाल सिंह कालेज (सायः कालीन)
लोधी रोड , नई दिल्ली – 110003

विषयः– उपदेशसार पर आधारित प्रतियोगिता के आयोजन के सम्बन्ध में ।

महोदय / महोदया,

निवेदन है कि दिल्ली संस्कृत अकादमी तथा रमन केन्द्र संयुक्त–तत्त्वावधान में उपदेशसार पर आधारित प्रतियोगिता (विद्यालय / महाविद्यालय संस्कृत महाविद्यालय स्तर) पर आयोजित करने जा रही है। यह प्रतियोगिता दिनांक 11.02.2017 (शनिवार) को पूर्वाह्ण 9.00 बजे से दिल्ली संस्कृत अकादमी प्लाट नं.–5, झण्डेवालान करोलबाग नई दिल्ली–110005 के सभागार में आयोजित की जायेगी । प्रतियोगिता के नियम संलग्न कर आपकी सेवा में प्रेषित किए जा रहे हैं।

अतः आपसे निवेदन है कि अपने विद्यालय / महाविद्यालय छात्र / छात्राओं को उपर्युक्त तिथि को निश्चित समय पर भेजने का कष्ट करें।

संलग्नः– प्रतियोगिता के नियम।

Notify on NB of Students & website

भवदीय

(डॉ.जीतराम भट्ट)
सचिव

Principal
9/2/17

उपदेश–सार–आधारित–प्रतियोगिता नियम

1 यह प्रतियोगिता दो स्तरों में आयोजित होगी,

(I) माध्यमिक स्तर छठी से बारहवीं कक्षा पर्यन्त (II) महाविद्यालय स्तर स्नातक एवं स्नातकोत्तर पर्यन्त

2 इस प्रतियोगिता में प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से प्रत्येक स्तर में केवल एक छात्र/छात्रा भाग ले सकते हैं।

3. उपदेश सार के निर्धारित श्लोक संलग्न किये गये हैं, इनके अतरिक्त अन्य श्लोक मान्य नही होंगे।

4. प्रत्येक प्रतिभागी के लिए माध्यमिक स्तर पर पांच मिनट और महाविद्यालय स्तर पर सात मिनट का समय निर्धारित है।

5. माध्यमिक स्तर में प्रतिभागी को श्लोकों को कण्ठस्थ कर सस्वर वाचन करना होगा।

6. महाविद्यालय स्तर में श्लोकों को कण्ठस्थ कर सस्वर वाचन एवं उनकी दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत करनी होगी।

7. इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित पुरस्कार होगें –

माध्यमिक स्तर के पुरस्कार –

प्रथम पुरस्कार – रु. 1500/–, द्वितीय पुरस्कार – रु. 1300/–

तृतीय पुरस्कार – रु. 1100/–, चतुर्थ पुरस्कार – रु. 700/–

पंचम पुरस्कार – रु. 500/–, तीन प्रोत्साहन – रु. 300/–

महाविद्यालय स्तर के पुरस्कार –

प्रथम पुरस्कार – रु. 2100/–, द्वितीय पुरस्कार – रु. 1800/–

तृतीय पुरस्कार – रु. 1500/–, चतुर्थ पुरस्कार – रु. 1100/–

पंचम पुरस्कार – रु. 700/–, तीन प्रोत्साहन – रु. 500/–

8. निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

उपदेशसार

कर्तुराज्ञया प्राप्यते फलम् । कर्म किं परं कर्म तज्जडम्।

कृतिमहोदधौ पतनकारणम् । फलमशाश्वतं गतिनिरोधकम् ॥ 1 ॥

नियंता (ईश्वर) के आदेश से कर्मों के फल की प्राप्ति होती है। अतएव कर्म सर्वोच्च कैसे हो सकता है? वास्तव में कर्म जड़ है। कर्मों के अथाह सागर में, कर्मों के अस्थायी फल मनुष्य के पतन का कारण बनते हैं। फल शाश्वत (स्थायी) नहीं होन से वे मुक्त में बाधक हैं।

ईश्वरार्पितं नेच्छया कृतम् । चित्तशोधकं मुक्तिसाधकम्।

कायवाङ्मनः कार्यमुत्तमम् । पूजनं जपश्चिन्तनं क्रमात् ॥ 2 ॥

फलासक्ति से मुक्त, ईश्वर को समर्पण भाव से किया गया कर्म, मन को शुद्ध करता तथा मुक्ति प्राप्ति का एक साधन है। शरीर, वाणी और मन द्वारा किए गए कर्मः पूजा, जप और ध्यान क्रमशः उत्तरात्तर क्रम में एक दूसरे से श्रेष्ठ हैं। (पूजा से जप श्रेष्ठ है तथा जप से ध्यान श्रेष्ठ है।)

जगत ईशधी युक्तसेवनम् । अष्टमूर्तिभृद्देवपूजनम्।

उत्तमस्तवादुच्चमन्दतः । चित्तजं जपध्यानमुत्तमम् ॥ 3 ॥

संसार–सेवा, ईश्वर–सेवा मानकर करना सही देव–पूजा है। 'वह' अष्टमूर्ति रूप है {अष्टमूर्ति रूप–वायु, जल, अग्नि,पृथ्वी एवं आकाश (पंचतत्व) चन्द्रमा, सूर्य और जीव} स्तोत्र पढ़ना या स्तुति–गान (ईश्वर की महिमा का) उत्तम है। किन्तु इससे श्रेष्ठ सस्वर जप है। सस्वर जप से मर द्वारा किया गया उपांशु जप श्रेष्ठ है। इन सबसे मानसिक जप (ध्यान) सर्वोत्तम है।

आज्यधारया स्रोतसा समम् । सरलचिन्तनं विरलतः परम्।

भेदभावनात् सोऽहमित्यसौ । भावनाऽभिदा पावनी मता ॥ 4 ॥

धृत की धारा और नदी के प्रवाह जैसा निर्बाध ध्यान, बाधित ध्यान से श्रेष्ठ है। 'मैं' और 'वह' की भेद भावना से रहित वह मै है, के अद्वैत (सोऽहम्) भावा से किया गया ध्यान, द्वैत भाव–'मै' और 'वह' (जीव और ब्रह्म)से किए गए ध्यान से पावन और श्रेष्ठ है।

भावशून्यसद्भावसुस्थितिः । भावनाबलाद्भक्तिरुत्तमा।

हृत्स्थले मनः स्वस्थता क्रिया । भक्तियोगबोधाश्च निश्चितम् ॥ 5 ॥

ध्यान की इस शक्ति से भाव–शून्य होकर, अपने सत् की अवस्था में सुस्थित हो जाना उत्तम भक्ति (परा–भक्ति) है। मन का, अपने स्त्रोत– हृदय स्थल में स्थित हो जाना (निवास करना) जो स्वयं की सहज प्रकृति है, कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग, ज्ञानयोग – सभी योगों का निश्चित लक्ष्य है।

वायुरोधनाल्लीयते मनः । जालपक्षिवद्रोधसाधनम् ।

चित्तवायवश्चित्क्रियायुताः । शाखयोर्द्वयी शक्तिमूलका ॥ 6 ॥

प्राणों के नियमन से मन लीन हो जाता है। जिस तरह पक्षी का पकड़ने के लिए जाल प्रयुक्त होता है उसी तरह प्राण– नियमन, मनः, नियंत्रण का एक (अस्थायी) साधन है। मन और प्राण क्रमशः ज्ञान और क्रिया शक्ति सम्पन्न हैं। ये, एक ही मूल शक्ति (स्त्रोत) की दो शाखाएँ हैं।

लयविनाशने उभयरोधने । लयगतं पुनर्भवति नो मृतम् ।

प्राणबन्धनाल्लीनमानसम् । एकचिन्तनान्नाशमेत्यदः ॥ 7 ॥

मन को रोकने (या स्थिर करने) के दो तरीके हैं – मन का लय और मन का नाश। लय में गया मन पुनः वापस आ जाता है (उदीत होता) है किन्तु मृत (नष्ट हुआ) मन कभी नहीं आता है। प्राण निरोध से लयबद्ध यह मन, उस 'एक–सत्' पर ध्यान करने अथवा एका चिन्तन से नष्ट हो जाता है।

नष्टमानसोत्कृष्टयोगिनः । कृत्यमस्ति किं स्वस्थितिं यतः ।

दृश्यवारितं चित्तमात्मनः । चित्त्वदर्शनं तत्त्वदर्शनम् ॥ 8 ॥

जिसका मन नष्ट हो चुका है, ऐसे उत्कृष्ट योगी को और क्या करना (शेष) है? कुछ भी नहीं। क्योंकि वह अपने 'स्वरूप' में अवस्थित हो गया है। बाह्य विषयों से मुड़कर अन्तर्मुखी हुआ मन स्वयं में चेतन–रूप का दर्शन करता है और यह दर्शन परम् सत् का दर्शन है।

मानसं तु किं मार्गणे कृते । नैव मानसं मार्ग आर्जवात् ।

वृत्तयस्त्वहं वृत्तिमाश्रिताः । वृत्तयों मनो विद्ध्यहं मनः ॥ 9 ॥

जब यह खोज की जाती है कि वास्तव में मन क्या है तो पता चलता है कि मन है ही नहीं। आत्मबोध का यह सीधा पथ है। विचार ही मन की संरचना करते हैं। सभी विचार, "मैं' के विचार' पा आश्रित हैं। इसलिए "मैं' के विचार' को ही मन जानो।

अहमयं कुतो भवति चिन्वतः । अयि पतत्यहं निजविचारणम् ।

अहमि नाशभाज्यहमहंतया । स्फुरति हृत्स्वयं परमपूर्णसत् ॥ 10 ॥

"मैं' का विचार कहां से उत्पन्न होता है, इस प्रकार अन्वेषण करने पर "मैं' का विचार (अहंकार) ध्वस्त हो जाता है। यह आत्म–अन्वेषण है। अहंकार के नाश होने पर 'स्व' (आत्मा) जो शाश्वत अनन्त सत् है स्वयमेव "मैं'–"मैं' ('अहम्'–'अहम्') जैसे स्फुरित होता है।

इदमहं पदाऽभिख्यमन्वहम् । अहमिलीनकेऽप्यलयसत्तया ।

विग्रहेन्द्रियप्राणधीतमः । नाहमेकसत्तज्जडं ह्यसत् ॥ 11 ॥

"मैं' शब्द पद की व्याख्या यह है कि सह 'वह' है जो व्यक्तिगत "मैं' के लोप होने पर भी शुद्ध सत्ता के रूप में सदैव शाश्वत बना रहता है। मैं एकमात्र अस्तित्त्वमान सत् हूं। मैं शरीर, इन्द्रियां, प्राण, बुद्धि और अज्ञान नहीं हूँ क्योंकि ये जड़ हैं और निश्चित ही अवास्तविक हैं।